क्रान्ति की छाया में

संघर्ष



संपादन – प्रखर श्रीवास्तव

<u>समर्पण</u>

सदा स्मृतिवान

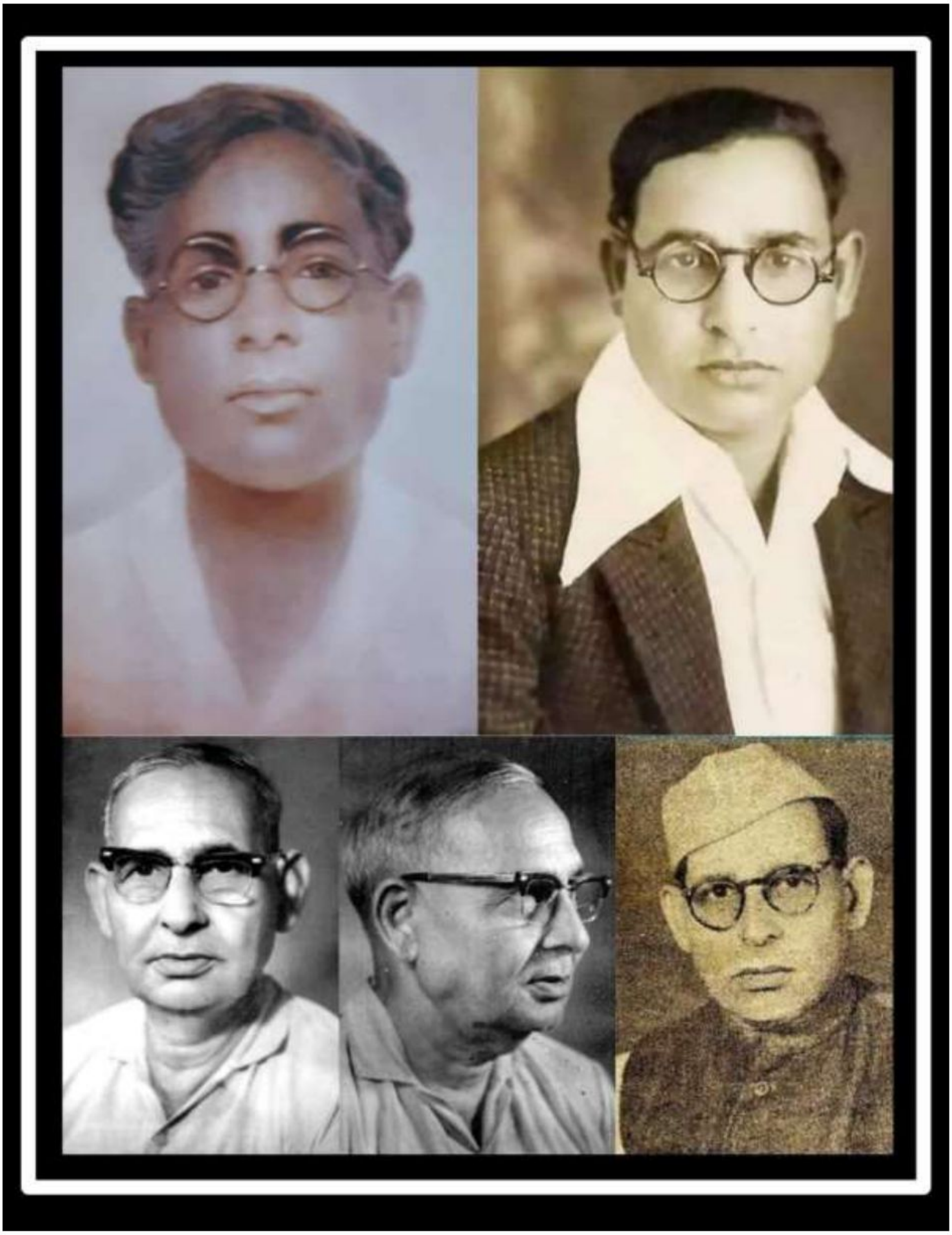


प्रकाशन : *“ क्रांतिवीर डॉ• गया प्रसाद कटियार स्मारक समिति ”*

संपादन : प्रखर श्रीवास्तव

संपर्क : +91-8604826347

स्वतन्त्रता सेनानी डॉ• गया प्रसाद कटियार की दुर्लभ फोटो



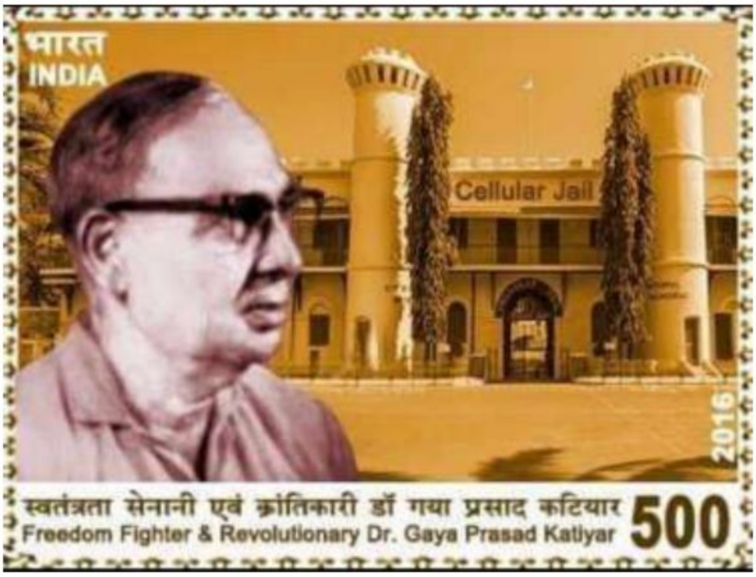
 

अंडमान निकोबार द्वीप की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में बनी काला पानी के नाम से कुख्यात सेल्यूलर जेल जिसे अंग्रेजों द्वारा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को कैद व अत्याचार करने के लिए बनाया गया था | डॉ॰ गया प्रसाद के पुत्र श्री क्रांति कटियार और उनके भतीजे आर्यन कटियार देश की धरोहर अपने पूर्वजों की स्मृतियों को देखने 2018 में पहुँचे थे |



डा० गयाप्रसाद, जयदेव कपूर व श्री शिव वर्मा जेल से छूटने के बाद

(17 वर्षों बाद अंग्रेजों की जेल से छूटने के बाद)



केंद्र सरकार ने 26 अप्रैल 2016 को पाँच रुपये का डाक टिकट भी जारी किया था। बिल्हौर क्षेत्र के गाँव खजुरी खुर्द में 20 जून 1900 को जन्मे डॉ. गया प्रसाद कटियार के *दादा महादीन कटियार ने 1857 की क्रांति में हिस्सा लिया था।*



फ़िरोज़पुर स्थित क्रांतिकारियों का गुप्त ठिकाना जहाँ **डॉ• गया प्रसाद** ने सांडर्स वध हेतु **सरदार भगत सिंह के केश और दाढ़ी काटी थी ।**

Visiting the legacy of country and his family

Neel.Kamal@timesgroup.com

Bathinda: As son of Bhagat Singh's contemporary Gaya Prasad entered the two-storey house in Ferozepur's Toori Bazaar on Sunday he realized his long cherished dream. He had grown up on stories around this hideout of freedom fighters Bhagat Singh and Chandra Shekhar Azad taken on rent by his father in 1928.





Bhagat Singh's hideout (left); and Kranti Kumar

Fifty-year-old Kranti Kumar Katiyar was overwhelmed to see the heritage building rented by freedom fighter Gaya Ram from a man named Lekh Raj under the fake name of Dr B S Nigam to run a pharmacy. The two-room house was actually the secret headquarter of Krantikari Party. Freedom fighters lived here for nearly six months in 1928-29. It was in this house that Bhagat Singh had undergone a makeover and trimmed his hair. Punjab government had announced to preserve the structure as a protected monument six months ago.

"For me, this small house is much more than any pilgrimage. Today is a big day in my life. I got to visit the place and bow down before it," Katiyar said while talking to TOI.

"I don't remember how many times had my father told me that he had rented a house in Toori Bazaar for the Krantikari Party. He told me about the heroics of Bhagat Singh and his comrades and their brief stopover at the house when Bhagat Singh had trimmed his hair. I have long wished to visit the house," said Katiyar, who is a civil engineer at IIT Kanpur. Gaya Prasad passed away at the age of 82 on February 10, 1993.

"My father had visited Hussainiwala in 1981 to pay tributes to Bhagat Singh, Rajguru and Sukhdev and to revive the memories of the times spent with Bhagat Singh. I had failed to accompany him then, but had accompanied him to Cellular Jail in Andaman earlier."

Katiyar said his father never forgot his last meeting with Bhagat Singh days before his hanging. "My father asked Bhagat Singh how he felt. In return, the revolutionary had laughed loudly and said: 'After two days, I will be free from the clutches of life and now it is for people like you to take care of our nation.' He told him it would be a long journey and they had to ensure that the society they had dreamt of is realized. 'You have to keep fighting to make it,' he had told my father," recalled Katiyar.

Born at Jagdishpur, Uttar Pradesh, in 1911, Gaya Prasad had joined Hindustan Socialist Republican Association (HSRA) in 1925 and came in contact with Chandra Shekhar Azad and Bhagat Singh soon after. He was arrested from Saharanpur in 1929 for his involvement in the Lahore Conspiracy Case. He joined the hunger strike at Lahore Jail with his fellow prisoners and undertook a strike at Cellular Jail too. He spent 17 years in jail in pre-independent India and two years in independent India. "The Union government was snooping on him and considered him a big threat to the sovereignty of India," said Katiyar.

Kranti Kumar Katiyar said his father would often talk about Bhagat Singh's love for books. "Bhagat Singh loved to read and he always had a book in his pocket or in shoulder bag. Father said he would also ask his contemporaries to read books," he shared.

"At the house in Toori Bazaar, when Bhagat Singh trimmed his hair to change his look, he had told my father and the other comrades, 'Baal to kya, desh ki azadi ke liye main gardan bhi katva loonga (Hair are no big deal. For India's independence, I can get my neck chopped off too),'" recounted Katiyar.

1/6/2015 Times of India

<u>क्रांतिकारी डॉ. गया प्रसाद कटियार के बेटे क्रांति कुमार कटियार ने इस ऐतिहासिक ईमारत के संरक्षण हेतु कई कदम उठाए, उन्होंने पंजाब यूथ यूनियन की मदद से 5000 से अधिक नागरिकों की यात्रा फ़िरोज़पुर में इस मांग के साथ निकाली थी कि इस स्थान और इस ईमारत को क्रांति धरोहर घोषित किया जाए | इस ऐतिहासिक ईमारत पर इंजिनियर राकेश कुमार द्वारा लिखी किताब को पंजाब सरकार द्वारा बेस्ट एडिटर बुक का सम्मान दिया था |</u>

समस्या

3/5/23 अमर उजाला

स्कूलों में पड़ चुकी हैं छुट्टियां, पर्यटकों की आवाजाही शुरू, दूर-दराज शहरों से आते हैं लोग गुप्त ठिकाना देखने

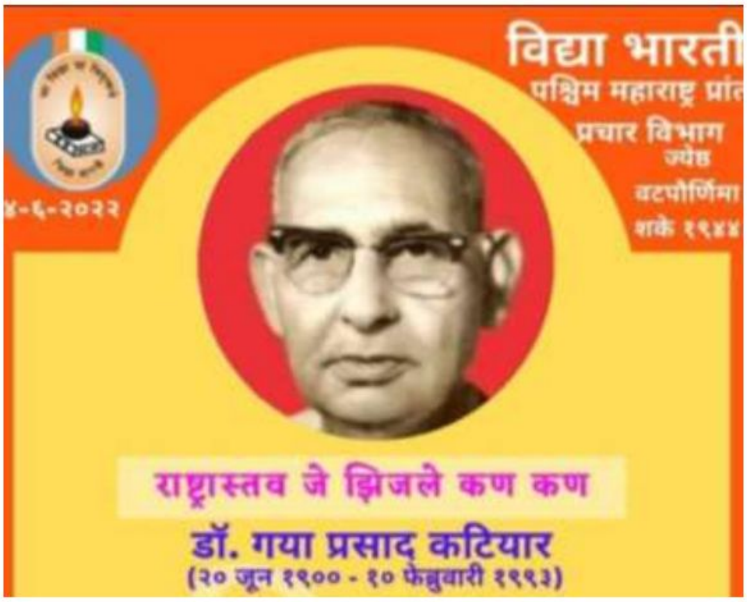
क्रांतिकारियों के गुप्त ठिकाने को देखने से रोकते हैं वहां रहने वाले

संवाद न्यूज एजेंसी

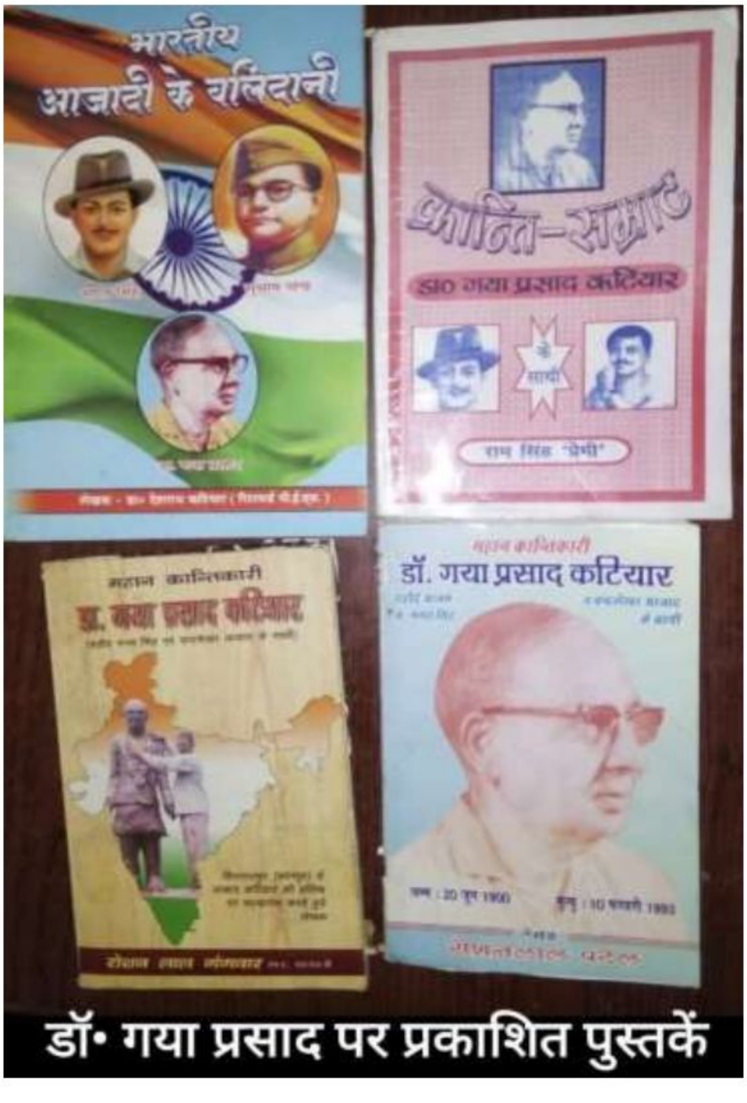


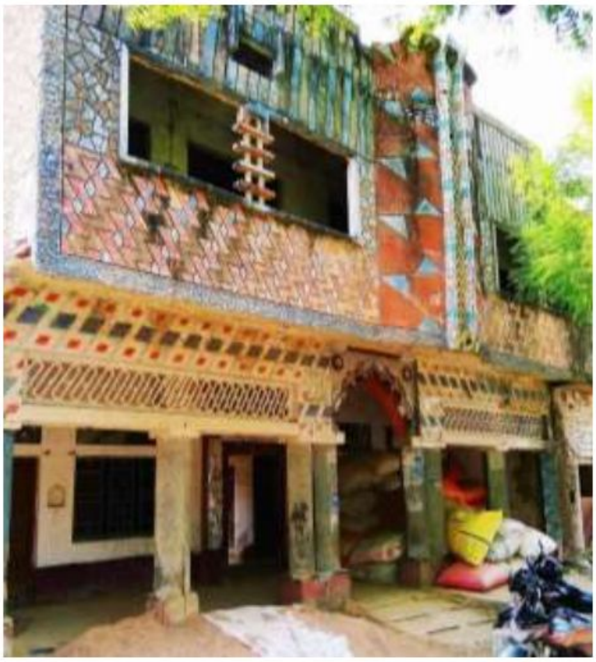
क्रांतिकारियों के गुप्त ठिकाने की इमारत। संवाद

फिरोजपुर को सैलानी केंद्र संबंधी किया जाएगा विकसित



महाराष्ट्र सरकार द्वारा कक्षा 9 के पाठ्यक्रम में शामिल किए गए डॉ• गया प्रसाद कटियार





ग्राम जगदीशपुर का वो घर जहाँ डॉ गया प्रसाद जेल से छूटने के बाद अंतिम समय तक रहे|



दैनिक जागरण, कानपुर www.jagran.com
11 फरवरी - 2020

अपराधियों में भी क्रांति के बीज बो देते थे डॉ कटियार

जागरण संवाददाता, कानपुर : अमर शहीद सरदार भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के साथी रहे क्रांतिकारी डॉ. गया प्रसाद कटियार जेल में बंद अपराधियों तक में क्रांति के बीज बो देते थे। सांडर्स की हत्या में डॉ. कटियार समेत छह साथियों को भी कालापानी की सजा हुई थी। वे जिस जेल गए, आंदोलन छेड़ते रहे। 10 फरवरी 1993 को अनंत यात्रा पर निकल गए। पिता की पुण्यतिथि पर उनके इंजीनियर बेटे क्रांति प्रसाद कटियार रोमांचकारी किस्से सुनाते हैं।

बिल्हौर इलाके के गांव खजुरी के जमींदार परिवार में जन्मे डॉ गया प्रसाद कटियार को लगता था कि आजादी हाथ फैलाकर मांगने से नहीं मिलेगी। उसके लिए अंग्रेजों से भिड़ना पड़ेगा। बेटे क्रांति प्रसाद कटियार बताते हैं कि क्रांतिकारियों में डॉक्टर सिर्फ उनके पिता ही थे। डॉक्टर के नाते क्रांतिकारी होने जैसा कोई शक भी नहीं करता था। लिहाजा, जहां क्रांतिकारी गतिविधियां चलानी होतीं, वे वहां क्लीनिक खोल लेते। बाहर दवाखाने का बोर्ड लगता और अंदर बम बनाने का काम। अंग्रेज सांडर्स की हत्या में सुखदेव, भगत व राजगुरु को सीधे दोषी मानते हुए फांसी दी गई, डॉ. कटियार समेत को षड्यंत्र में सहयोगी। 15 मई को सहारनपुर से गिरफ्तारी हुई। कालापानी की सजा मिली। वे 192 1946 तक तक जेलों में यातनाएं सहे। इस दौरान 65 दिन अनशन किया। शादीशुदा थे, घर पर पत्नी बेटी थी, लेकिन न कभी झुके, माफी मांगी। जनवरी 1945 से में बंद डॉ. कटियार 21 फरवरी को रिहा किए गए। फिर, शिवराज के गांव जगदीशपुर में आ बसे आखिरी सांस ली।

क्रांतिकारी डॉ गया प्रसाद कटियार • स्वजन

• भगत सिंह के साथी थे डॉ गया प्रसाद कटियार, कालापानी की पाई थी सजा

पुण्यतिथि पर नमन

- 17 साल बाद मिली जेल से रिहाई
- 10 फरवरी 1993 को छोड़ गए दुनिया

दैनिक जागरण - 29 सितम्बर 2023

भगत सिंह ने साथियों के साथ हिला दी थी ब्रिटिश हुकूमत

जासं, कानपुर : शहीद-ए-आजम भगत सिंह ने अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ मिलकर ब्रिटिश हुकूमत की नींव हिला दी थी। उनके बलिदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये बातें शहीद भगत सिंह की 116वीं जयंती पर रामादेवी स्थित एक गेस्ट हाउस में कार्यक्रम के दौरान कही गईं। उन्हें श्रद्धांजलि भी दी गई।

भारत सेवक समाज और देशज फाउंडेशन ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ शहीद भगत सिंह के चित्र पर पुष्प अर्पित कर हुआ। क्रांतिकारियों के स्वजन एवं उत्कृष्ट सामाजिक कार्यों के लिए क्रांति कुमार कटियार, विजय कुमार, सुधींद्र पांडेय, मनोज कपूर, जनकराज गुप्ता, रंजीत सिंह, प्रतिभा पाल को सम्मानित किया गया। कवि अजय अंजाम ने 'देशभक्ति बाल उधम के हृदय का क्रोध है, अग्निधर्मा भगत सिंह का नीरधर्मा बोध है' रचना के जरिये भगत सिंह के विचारों पर प्रकाश डाला। सुखबीर सिंह मलिक, उषा पाल, शरद प्रकाश अग्रवाल, डा. ओम प्रकाश आनंद, सीमा अग्रवाल, अतहर नईम, योगेश ठाकुर, राकेश सिंह, रजनीश गुप्ता, अमित पांडेय मौजूद थे। श्री पंच प्यारे धर्म प्रचारक सभा ने शास्त्री भवन खलासी लाइन में शहीद-ए-आजम भगत सिंह का जन्मोत्सव मनाया। सांसद सत्यदेव पचौरी ने कहा कि सभी को भगत सिंह बलिदान को याद रखना चाहिए। कार्यक्रम में संयुक्त पुलिस आयुक्त आनंद प्रकाश तिवारी, मान सिंह बग्गा, अजीत सिंह छाबड़ा, भूपिंदर सिंह, गुरविंदर सिंह बग्गा, रविंदर सिंह, चरनजीत सिंह रहे। लाटूश रोड स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। भारत की जनवादी नौजवान सभा व अन्य सामाजिक संगठनों ने मूलगंज चौराहा स्थित भगत सिंह मार्केट पर लगी प्रतिमा पर पुष्पांजलि सभा आयोजित की। संयुक्त विपक्षी मोर्चा के संयोजक सुरेश गुप्ता, विनोद पांडेय, चमन खन्ना, अमित केसरवानी, सर्वेश पांडेय मिन्नी, श्याम देव रहे।

<u>यादों में डॉ• गया प्रसाद कटियार...</u>

1 2 3







1• वर्ष 1995 में बिल्हौर बस स्टॉप के पास वार्ड 3 का नाम गया प्रसाद नगर घोषित किया गया|

2• उ•प्र• सरकार द्वारा वर्ष 2000 में ब्लॉक शिवराजपुर में प्रतिमा स्थापित की गई|

3• वर्ष 2015 में जन्मस्थान ग्राम खजुरी खुर्द में "डॉ• गया प्रसाद कटियार शहीद स्मारक पार्क" स्थापित किया गया|



वर्ष 2015 में जन्मस्थान ग्राम खजुरी खुर्द में स्थापित प्रतिमा



वर्ष 2015 में ही डॉ॰ साहब के जन्मस्थान खजुरी खुर्द बिल्हौर ककवन रोड पर स्मृति प्रवेश द्वार स्थापित किया गया



<u>वर्ष 2024 में बकौंठी जीटी रोड पर प्रवेश द्वार स्थापित किया गया।</u>



क्रांतिकारी पर स्टेशन का नाम रखने की पहल शुरू

■ अनुराग द्विवेदी

बिल्हौर। रेलवे स्टेशन का नामकरण स्थानीय खजुरी खुर्द ग्राम में जन्मे प्रसिद्ध क्रांतिकारी डॉ. गया प्रसाद कटियार के नाम पर किए जाने के लिए शासन स्तर पर पहल शुरू हो गई है। जनता के

लाहौर केस के सदाबहार क्रांतिकारी - डॉ• गया प्रसाद

लेखक : सुधीर विद्यार्थी

कानपुर से जगदीशपुर गाँव का वह सफल हमने बस और खड़खड़ पर बैठकर पूरा किया | शहीद भगत सिंह के साथ डॉ• गया प्रसाद की इस बस्ती तक पहुंचने का मार्ग हमें हर पल रोमांच से भर देता रहा | उनके घर के दरवाजे पर नीम का दरख्त और पीछे चौपालनुमा कुछ हिस्सा,, डॉक्टर साहब से भेंट हुई, तो कल्पना के रंगों से उनका मिलान मुश्किल था | ठिगनी और सामान्य सी कद-काठी, धोती और बनियान लापरवाही से पहने हुए, लेकिन आंखें चश्मे से दूर तक झांक रही थीं| हम कल्पना भी नहीं कर पा रहे थे कि इस शख्स ने भगत सिंह के साथ एक समय क्रांति के लंबे डग भरते हुए सुदूर अंडमान की लंबी सजा काटी|

उन्होंने डॉक्टरी का पेशा जब शुरू किया, तब वह शादीशुदा थे | क्रांतिकारी दल में शामिल होने के बाद घर आकर पत्नी से कहा कि तुम अपने माथे का सिंदूर पोस्ट डालो और मेरे सिर पर हाथ रख कर देश के लिए विदा करो | सुनकर पत्नी रोने धोने लगी आखिर उन कठिन क्षणों में वह आजादी के संघर्ष में हिस्सेदारी करने के लिए निकल पड़े | ' हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ' के सदस्य के नाते उनकी सबसे बड़ी उपयोगिता यह थी कि बाहर डॉक्टर बीएस निगम के नाम से डॉक्टर की दुकान होती और भीतर क्रांतिकारियों के केंद्र में बम बनाने का कारखाना | वह आर्य समाज और गांधी के सत्याग्रह से भी जुड़े, लेकिन चौरी चौरा की घटना के बाद वहां से उनका मन उचट गया और वह मजदूर सभा में आए | हरिहरनाथ शास्त्री और गणेश शंकर विद्यार्थी से उनकी भेंट हुई | वह मुनेश्वर अवस्थी से भी मिले जो उन दिनों गोरखपुर से स्वदेश का संपादन करने के साथ ही क्रांतिकारी दल से संबद्ध थे |

क्रांति के मार्ग पर चलते हुए उनकी मुलाकात विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, सुरेंद्र पांडे, जयदेव कपूर, भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद से हुई जो समाजवाद के प्रति गहरे तक समर्पित थे | आजाद से वह पहली बार झांसी में मिले जाजमऊ के पास होने वाली बैठक के लिए उन्हें आजाद को झांसी लाने की जिम्मेदारी सौंप गई थी | क्रांतिकारी भगवान दास माहौर से भी वहीं के पुस्तकालय में आमना सामना हो गया | दल के नेता योगेश चंद्र चटर्जी को जेल से छुड़ाने की कोशिशों में वह एक बार पुलिस के हाथों में आने से बाल-बाल बचे |

बाद में वह फिरोजपुर जाकर छिपे तौर पर डॉक्टरी की प्रेक्टिस करने लगे | वहां उनके साथ दल का सदस्य जय गोपाल भी था, जो बाद में मुखबिर बना |

भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त द्वारा दिल्ली की केंद्रीय असेंबली में बम फेक जाने से पहले आगरा क्रांतिकारियों का केंद्र बन गया था| वहाँ हींग की मंडी में बम बनाने का कारखाना स्थापित किया गया | भगत सिंह के बुलावे पर बंगाल से यतिंद्रनाथ दास ने आकर बम बनाने की कला सिखाई | आगरा में गया प्रसाद को यह काम सौंपा गया कि वह सहारनपुर जाकर किराए पर मकान लेकर इस तरह रहें कि किसी को शक ना हो | बाहर होम्योपैथिक दवाखाना और भीतर पार्टी का काम | बाद में लाहौर षड्यंत्र मामले में इसी केंद्र पर जयदेव कपूर शिव वर्मा और डॉक्टर साहब गिरफ्तार कर लिए गए |

लाहौर में सुखदेव पहले ही पकड़े जा चुके थे | लाहौर मुकदमे में अभियोग पक्ष एक भी ऐसा सबूत पेश नहीं कर सका कि गया प्रसाद किसी सशस्त्र कार्रवाई में लिप्त थे | पर वह जिस दल के सदस्य थे उसने हुकूमत के खिलाफ युद्ध का ऐलान किया था और वह एक बम फैक्ट्री के भीतर गिरफ्तार हुए थे उन्हें सजा दिलाने के लिए यह पर्याप्त था |

जेल में क्रांतिकारियों की तीन श्रेणियां थीं | पहली पंक्ति उनकी थी जिनका केस वकीलों को लड़ना था | इसमें देशराज, प्रेम दत्त, मास्टर आज्ञाराम, अजय घोष और पंडित किशोरीलाल थे | दूसरी श्रेणी शत्रु की अदालत को मान्यता न देने वालों की थी, जिसमें डॉक्टर गया प्रसाद, महावीर सिंह, बटुकेश्वर दत्त, कुंदन लाल और जितेंद्र लाल सान्याल तथा तीसरी श्रेणी में अपना केस खुद लडने वाले भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, शिव वर्मा, जयदेव कपूर, विजय कुमार सिंह, कमलनाथ तिवारी और सुरेंद्र पांडे को रखा गया | गया प्रसाद राजनीतिक वाद विवाद में सम्मिलित होते रहे और मार खाने वाले साथियों की सूची में उनका नाम सबसे ऊपर होता था|

गया प्रसाद जी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई उन्हें पंजाब की जेल में रखने के बाद महावीर सिंह के साथ बेलारी सेंट्रल जेल भेज दिया गया | वहाँ सत्याग्रहियों के साथ हो रहे उत्पीड़न के विरुद्ध साथ देने के लिए उन्हें कड़ी सजा मिली| जनवरी 1933 में वह अंडमान भेज दिए गए, जहां उन्होंने 1937 की प्रसिद्ध भूख हड़ताल में हिस्सा लिया | बीमार होने पर उन्हें बलरामपुर और सुल्तानपुर की जेल में लाया गया | उनकी रिहाई 21 फरवरी 1946 को हुई | आजादी मिलने पर भी उन्होंने चंद्रशेखर आजाद और भगत सिंह के समाजवादी सपने को पूरा करने के संघर्ष को भुलाया नहीं | मुझे याद है कि पहली मुलाकात

में ही उन्होंने मुझसे कहा था, 'हम गुलामी को सिर्फ भारत से ही नहीं बल्कि सारी दुनिया से मिटा देना चाहते थे | हम तत्कालीन व्यवस्था को सिर्फ इसलिए खत्म करना चाहते थे क्योंकि उसका आधार हिंसा थी|'

इसके बाद डॉक्टर साहब हरदोई के एक जलसे में मिले जहाँ चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा का अनावरण करने कैप्टन डॉक्टर लक्ष्मी सहगल आई थीं | तब उनके दोनों पैरों में सूजन थी | फिर कानपुर के एक विवाह समारोह में उनसे भेंट हुई | 10 फरवरी 1993 को उनके निधन का समाचार मिला तो उनके घर में बिताए पल आँखों के सामने जीवंत हो उठे | वह सही अर्थों में सदाबहार क्रांतिकारी थे|

*---****---*



दैनिक जागरण

inext

क्रांतिकारियों संग मिलकर अंग्रेजों से डॉ. गया प्रसाद ने लिया था लोहा

आजादी के लिए 21 साल तक सहते रहे अंग्रेजों की यातनाएं

डॉ. गया प्रसाद कटियार (फाइल)

महान क्रांतिकारी थे बिल्हौर के डॉ. गया प्रसाद कटियार

भगत सिंह और आजाद के साथ लड़ी थी आजादी की लड़ाई

डॉ. गया प्रसाद के जीवन के अहम पड़ाव

- 20 जून साल 1900 को जन्म हुआ, 1921 में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े
- 1925 में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी में शामिल हुए.
- 15 मई 1929 को सहारनपुर पार्टी कार्यालय से गिरफ्तार हुए.
- 21 साल तक काला पानी सहित देश की विभिन्न जेलों में रहे
- 1946 को रिहा हुए, आजादी के बाद 1958 और 1964 में जेल गए.
- 10 फरवरी 1993 को डॉ. प्रसाद की मृत्यु हो गई.

लाहौर जेल में बंदियों के साथ 63 दिन की भूख हड़ताल

जेल से छूटने के बाद साथियों संग डॉ. गया प्रसाद. (फा.)

प्रताप प्रेस में भी किया काम

'मां' के लिए पुछवा दिया था पत्नी का सिंदूर

बेटा क्रांति कुमार.

निर्मला दादी की याद में...

<u>लेखक : प्रखर श्रीवास्तव</u>

लाहौर षड़यंत्र केस में शामिल और कालापानी की सजा काटने वाले सरदार भगत सिंह के अनन्य सहयोगी अमर स्वतंत्रता सेनानी डॉ• गया प्रसाद कटियार के क्रांति जीवन में अहम भूमिका निभाने वाली उनकी धर्मपत्नी निर्मला देवी ने 24 फरवरी, 2024 की रात 94 वर्ष की उम्र में इंद्रा नगर, कानपुर स्थित अपने निवास में आखिरी सांस ली |

उनसे जब पहली बार मिला तो वो उतनी बीमार नहीं थी जितनी पिछले वर्षों में हो गईं थीं , पहली मुलाक़ात के दौरान वे अपने बिस्तर पर बैठे हुए बार-बार प्लेट से नाश्ता उठाने का आग्रह कर रही थीं, उस दौरान गौर करने वाली दो बातें थीं, पहली कि वो टीवी के समाचार पर भी नज़र डालती थीं और उनकी आँखे अख़बार भी पढ़ने में सक्षम थीं और दूसरी कि जब कोई उनके पैर छूता तो आशीर्वाद में वो लगभग कुछ सेकेण्ड तक पीठ में 5-7 बार हाथ फेरती थीं जो कि मन को छू सा जाता था |

जुलाई 2021 में उनके जन्मदिन पर मुझे उनके साथ कुछ पल बिताने का अवसर मिला जो कि मेरे जीवन के पन्नों में अहम रूप से दर्ज रहेगा |



वो लम्बे समय तक सक्रिय रहीं और आज़ादी के किस्से सुनाया करती थीं | दिसंबर में ही कानपुर यूनिवर्सिटी के एक कार्यक्रम में फ़िल्म अभिनेता अखिलेन्द्र मिश्रा आए थे जिन्होंने किसी फ़िल्म में चंद्र शेखर आज़ाद का किरदार भी निभाया था और दूरदर्शन के समय यक्कू के नाम से चर्चा में आए थे | उन्हें कानपुर में बड़ी दिलचस्पी रहती है मैंने जब उन्हें डॉ• गया प्रसाद कटियार और उनकी जीवत पत्नी के विषय में बताया तो उन्होंने अगली बार आने पर उनके घर चल मिलने की इच्छा जाहिर की थी.. मगर वो इतने खुशनसीब नहीं थे कि क्रांति की जीवंत लौ के दीदार कर सकें | क्रांतिकारियों का शहर कहे जाने वाले शहर कानपुर के

नागरिक अब निर्जीव से हो चले हैं, जिनके पूर्वज कभी नाना साहब पेशवा के इशारे पर जान की बाज़ी लगा दिया करते थे, जिनके पूर्वजों ने अंग्रेजी सल्तनत के आगे झुकने से ज्यादा भला फूल बाग़ के मैदान फाँसी चढ़ जाना समझा वहाँ के क्रांतिवीरों के वंशजो के प्रति इस शहर की आवाम कर्जदार है और तब तक रहेगी जब तक कोई बड़ा संकट ना आ जाए या जब तक उन्हें आज़ादी की क़ीमत ना महसूस हो जाए... तात्या टोपे के पारिवारिक लोग आज भी बिठूर में एक छोटी दुकान के माध्यम से जीवन यापन करने को मजबूर हैं |

डॉ• गया प्रसाद ने भी अपने अंतिम इंटरव्यू में कहा था कि

"जिस आजादी की कल्पना हमने की थी, वह तो ऐसा नहीं थी, इस वातावरण में मेरा दम घुटता है, आज दो दो पैसे में लोगों का ईमान बिक रहा है|"

उनकी पत्नी निर्मला देवी सामाजिक संघर्षों में डॉ कटियार का साथ देती थीं व सामाजिक सरोकार से जुड़ें मुद्दों पर जागरूकता का काम किया करती थीं | जब वर्ष 1956 में 6 माह के लिए व वर्ष 1965 में डेढ़ वर्ष के लिए डॉ. कटियार जेल गए तब उनके तीन बेटियों और दो बेटों की जिम्मेदारी अकेले निर्मला देवी ने संभाली इसके बावजूद वो कभी कमजोर नहीं पड़ी |

वो जब भी डॉ. गया प्रसाद से मिलने जेल जाती तो डॉ. कटियार के साथ ही साथ जेल काट रहे अन्य क्रांतिकारी साथियों को भी भी देश के प्रति उत्साहित कर लौटती थीं |

वर्ष 1952 और 1957 में कम्युनिस्ट पार्टी के टिकट पर जब डॉ. कटियार बिल्हौर विधानसभा सीट से चुनावी मैदान में कूदे तो निर्मला देवी भी सक्रिय रूप से नागरिकों को संगठित करने में लग गईं, निर्मला देवी महिला सशक्तिकरण के पहलुओं पर ग्रामीण महिलाओं को जागरूक करने का काम किया करती थीं |

लम्बे समय से अस्वस्थ होने के बावजूद निर्मला देवी न सिर्फ सामाजिक कार्यकर्ताओं से भेंट वार्ता किया करती थीं बल्कि राष्ट्रीय चेतना के त्योहार पर कवरेज हेतु आए पत्रकारों को लंबे साक्षात्कार दिया करती थीं |

निर्मला देवी शोषण मुक्त समाज की आकांक्षा रखने के साथ ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ. गया प्रसाद कटियार के सपनों को साकार होते देखना चाहती थीं |

उनके परिवार में बेटे क्रांति कुमार कटियार बहु डॉ. सुमन बाला कटियार व बेटे स्वतंत्र प्रकाश कटियार व बहु मीरा कटियार हैं |

क्रांति की दुनिया करीब से देखने वाली निर्मला देवी ने मरणोपरांत अपनी नेत्र दान कर दी थी जिससे कानपुर के राजू और सुरेंद्र के जीवन में रौशनी आई | वहीं निर्मला देवी ने वर्ष 2009 में स्वइच्छा से देह दान की घोषणा की थी जिसके चलते उनका पार्थिव देह कानपुर मेडिकल कॉलेज में चिकित्सा जगत को समर्पित कर दिया गया था |

मेरा अभिमान है कि मैं ऐसे परिवार के साथ नज़दीक से जुड़ पाया, मुझे गर्व है कि मैं उनकी पत्नी का स्नेह पा पाया, जो लाला लाजपत राय के सम्मान में सांडर्स वध की योजना में शामिल रहे, जिन्होंने गणेश शंकर विद्यार्थी के साथ कलम घिसी, जिन्होंने देश की आज़ादी की लड़ाई में सरदार भगत सिंह के साथ यातनाएं झेली |

*---***---*

डॉ॰ गया प्रसाद कटियार - एक युग पुरुष

लेखक : डॉ॰ सुमन बाला कटियार

पागल मत बनो, यह भावुक होने का समय नहीं है मेरा क्या है, मैं तो कुछ दिन का मेहमान हूँ | फांसी पर जलकर सारे झंझटों से छुटकारा पा जाऊंगा, लेकिन तुम लोगों को लंबा सफर तय करना है| मुझे यकीन है कि उत्तरदायित्व के भारी बोझ और लंबे अभियान के बाद भी तुम थकोगे नहीं, सुस्त नहीं होंगे और हार कर रास्ते में बैठ नहीं जाओगे | यह वह शब्द है जो सरदार भगत सिंह ने फांसी पर चढ़ने के कुछ दिन पूर्व जेल की सलाखों से अंतिम मुलाकात में अपने प्रिय साथी डॉक्टर गया प्रसाद कटियार की आंखों में आंसू देख कर कहे थे| यह वही डॉ• गया प्रसाद हैं जिन्हें 7 अक्टूबर 1930 को अंग्रेजी हुकूमत ने प्रसिद्ध ' लाहौर षड्यंत्र केस' मैं आजीवन कारावास कालापानी की सजा दी थी | इसी मुकदमे में सरदार भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु को फाँसी की सजा सुनाई गई थी |

जिन्हें आज भुला सा दिया गया है आज देश व प्रदेश में शासन कर चुके विभिन्न राजनीतिक दलों, सरकारों, इतिहासकारों ने इस आजादी के दीवाने क्रांतिकारियों की कुर्बानी को भुला दिया है|

20 जून 1900 को कानपुर जिले की बिल्हौर तहसील से जुड़े गांव खजूरी खुर्द में पिता मौजीराम व माता नंदरानी के घर इस महान क्रांतिकारी का जन्म हुआ | आपके दादा चौधरी महादीन कटियार ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया था | जिसकी कहानी सुनकर बचपन में ही गया प्रसाद के मन में अंग्रेजों के प्रति नफरत पैदा हो गई, गया प्रसाद ने हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करके डॉक्टरी का कोर्स किया और आर्य समाज व कानपुर की मजदूर सभा में कार्य करना आरंभ कर दिया यहीं पर गणेश शंकर विद्यार्थी और हरिहरनाथ शास्त्री आदि के साथ कार्य करते हुए उनका परिचय देश के बड़े क्रांतिकारियों से हुआ |

क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ने में सबसे बड़ी बाधा उनका विवाहित होना था, जिसके चलते उन्होंने अपनी पत्नी रज्जू देवी से अपने सामने यह कहकर माथे से सिंदूर पोंछ दिया कि मैं क्रांतिकारी पार्टी ' हिंदुस्तान सोशलिस्ट एसोसिएशन ' (HSRA) का सदस्य बनकर मातृभूमि की सेवा में प्राणों की बाजी लगाने जा रहा हूँ और समझ लो कि तुम विधवा हो गई हो | इसके बाद रज्जो देवी जीते जी अपने पति के दर्शन ना कर सकी और तड़प तड़प कर उसे

सुहागिन विधवा ने अपने प्राण त्याग दिए | यह घटना हमारे स्वर्णिम स्वतंत्रता आंदोलन की एक दुर्लभ घटना है | आज रज्जो देवी के जन्म व अवसान स्थल शिवराजपुर के बैरी गाँव को लोग भूल गए हैं |

विभिन्न क्रांतिकारी पार्टी में कार्य करते हुए डॉक्टर साहब ने अपने डॉक्टरी ज्ञान का उपयोग करते हुए विभिन्न नामों से देश के विभिन्न शहरों में दवाखाना खोले जहाँ बाहर दवा खाना और अंदर बमों के कारखाने चलाए जाते थे, भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त ने जिन बमों को 8 अप्रैल 1929 को दिल्ली संसद भवन में फेंका था उनका निर्माण डॉ• गया प्रसाद की देखरेख में ही हुआ था |

सरदार भगत सिंह से नजदीकी तौर पर जुड़े रहे डॉक्टर कटियार ने क्रांतिकारी पार्टी हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के केंद्रीय कार्यालय का भी संचालन किया | आज हम इंकलाब जिंदाबाद का जो नारा सुनते हैं इसे जन-जन तक फैलाने में इसी पार्टी के क्रांतिकारी साथियों का योगदान है| जब देश के सम्मानित नेता लाला लाजपत राय की बरबर हत्या के विरोध स्वरूप अंग्रेज अधिकारी सांडर्स की हत्या के कार्य को भगत सिंह राजगुरु और चंद्रशेखर आजाद ने अंजाम दिया तो विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली अंग्रेज सरकार की चूलें हिल गई | इस कार्य को अंजाम देने के लिए युवा सिख भगत सिंह को अपने सिख धर्म के विरुद्ध केश व दाढ़ी कटानी पड़ी | लाहौर षड्यंत्र केस की कार्रवाई व फैसले का गहन अध्ययन करने पर पता चलता है कि यह कार्य डॉक्टर गया प्रसाद ने अपने हाथों से फिरोजपुर में किया था जहाँ वे डॉक्टर बी एस निगम के फर्जी नाम से दवाखाना चलाते थे | अब इस ऐतिहासिक इमारत को पंजाब सरकार ने राष्ट्रीय धरोहर घोषित कर दिया है|

जब सांडर्स हत्याकांड के बाद अंग्रेजों ने क्रांतिकारियों की धर पकड़ शुरू की तो डॉक्टर कटियार भी सहारनपुर में बम फैक्ट्री का संचालन करते हुए शिव वर्मा, जयदेव कपूर के साथ 15 मई, 1929 को दर्जनों बम व पिस्तौलों के साथ गिरफ्तार हो गए | डॉ• साहब को बमों के निर्माण की कला यतींद्रनाथ दास और पिस्तौल चलाने की ट्रेनिंग चंद्रशेखर आजाद ने दी थी | डॉक्टर साहब को गिरफ्तार कर जेल ले जाते समय डॉक्टर साहब ने जेब में पड़े चंद्रभानु गुप्ता व मोहनलाल सक्सेना जैसे प्रसिद्ध कांग्रेसी नेताओं के जिक्र वाले लंबे पत्रों को जान हथेली पर रखकर सूखे मुँह निगल लिया, जिसमें चंद्रशेखर आजाद द्वारा प्रसिद्ध क्रांतिकारी योगेश चटर्जी और उनके सहयोगी को जेल को बम से उड़कर छुड़ाने की योजना का विस्तृत उल्लेख था |

गिरफ्तारी के बाद डॉक्टर गया प्रसाद पर अपने साथियों से गद्दारी कर राज उगलवाने के लिए पुलिस ने उन्हें कई अमानवीय व बरबर यातनाएं दी, परंतु सरकार सफल न हो सकी फिर क्या था डॉक्टर साहब व उनके कई साथियों पर एक तरफ मुकदमा चलाकर, बगैर पूरे गवाह को सुने और बिना जिरह के, उनकी अनुपस्थिति में ही बंद कमरे में बहुचर्चित ' लाहौर षड्यंत्र केस ' में उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुना दी | यह केस विश्व के सर्वाधिक चर्चित केसों में है जिसमें सरकार ने न्याय के नाम पर कानून की धज्जियां उड़ा दी थीं | अभी कुछ समय पूर्व सुप्रीम कोर्ट ने इस महत्वपूर्ण केस की फाइलों को प्रदर्शनी के माध्यम से आम जनता के समक्ष खोला था |

15 मई, 1929 की गिरफ्तारी से लेकर 21 फरवरी 1946 तक की रिहाई तक के लगभग 17 वर्षों (200 महीने से अधिक) के लम्बे जेल जीवन में डॉ• साहब से घबराई अंग्रेज सरकार ने उन्हें हिंदुस्तान के विभिन्न प्रांतो की जेल में रखा जिसमें लाहौर, रावलपिंडी, मुल्तान (अब पाकिस्तान में) कोलकाता, बेलारी (कर्नाटक), राजमहेन्द्री, सहारनपुर, नैनी, सुल्तानपुर, लखनऊ, कानपुर इत्यादि शामिल हैं |

अंडमान निकोबार द्वीप की सेल्यूलर जेल (काला पानी) में वे 6 वर्षों से अधिक समय तक बंदी रहे, जहाँ उन्होंने कम्युनिस्ट कंसोलिडेशन की स्थापना करके अपने 400 बंदियों के साथ मिलकर 46 दिन की भूख हड़ताल की, जो कि उसे समय यह एक विश्व रिकॉर्ड थी | इसमें केस के आजन्म कारावासी महावीर सिंह की मृत्यु हो गई थी | डॉ साहब ने अपने जेल जीवन में दर्जनों भूख हड़तालें कीं, जिनका योग डेढ़ वर्ष से अधिक होगा | इसमें जुलाई 1930 में लाहौर जेल में 65 दिन चली भूख हड़ताल उल्लेखनीय है इसमें केस के साथी यतींद्र दास शहीद हो गए थे | यह बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि इसी भूख हड़ताल के चलते जेल में राजनीतिक बंदियों के लिए बी क्लास का निर्माण हुआ | जिससे कांग्रेस के बंदियों को भी यह सुविधा मिलने लगी थी परंतु अंग्रेजों ने क्रांतिकारी बंदियों को यह सुविधा नहीं दी थी|

10 फरवरी 1933 को चंद्रशेखर आजाद और भगत सिंह के सपनों का निर्माण करते हुए यह योद्धा सदा-सदा के लिए सो गया | आज डॉक्टर कटियार की पत्नी निर्मला देवी जीवित है जिनका विवाह डॉक्टर साहब के साथ 1947 में हुआ था | अतीत में खोई वृद्ध निर्मला देवी दुख भरे शब्दों में बताती हैं की साम्यवादी विचारों के होने के कारण आजादी के बाद भी डॉक्टर साहब हमेशा किसानों व मजदूरों की भलाई में जी जान से लगे रहते थे | इसी कारण सरकार उन्हें पकड़ने के लिए बार-बार घर में छापा मारा करती थी | वह पकड़े भी गए और

दो वर्षों से अधिक समय तक स्वतंत्र भारत की जेलों में रहें | 46 वर्षों तक डॉक्टर साहब के साथ कंधा से कंधा मिलाकर जन सेवा में लगी रही इस वृद्ध और लाचार निर्मला देवी को देखने की फुर्सत आज कितने लोगों में है ?

डॉ• गया प्रसाद से संबंधित जानकारी मांगने पर उनके बेटे क्रांति कुमार बताते हैं कि वर्ष 2000 में शिवराजपुर में 7 फीट की कांस्य प्रतिमा की स्थापना करके सरकार ने अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली है| वहीं सरकारी स्तर पर वर्षों से कोई कार्यक्रम का आयोजन नहीं हुआ है| कुछ स्वयंसेवी संगठन ही वर्ष में दो-तीन कार्यक्रम का आयोजन कर लेते हैं | साहित्य के बारे में पूछने पर क्रांति कुमार बताते हैं कि रोशन लाल गंगवार (बरेली), डॉ देशराज कटियार (कानपुर), रामसिंह प्रेमी (हरदोई), आदि ने डॉ• साहब के जीवन पर पुस्तकों का प्रकाशन किया है, परंतु आज भी हमारे परिवार में ऐसे दुर्लभ पत्र व दस्तावेज मौजूद है जिनका प्रकाशन सरकार व इतिहासकारों द्वारा किया जाना चाहिए | डॉ• गया प्रसाद के परिजनों ने स्वयं से उनके जन्म स्थान ग्राम खजूरी खुर्द बिल्हौर कानपुर में प्रतिमा व स्मृति द्वारा स्थापित किया है और बिल्हौर में उनके नाम से एक मोहल्ला गया प्रसाद नगर है| किन्तु उनके मृत्यु स्थान ग्राम जगदीशपुर शिवराजपुर कानपुर में उनकी स्मृति में एक भी प्रतीक चिन्ह नहीं है जिससे कि आने वाली पीढ़ियां उनको याद कर सकें |

माननीय **अनुप्रिया पटेल केंद्रीय मंत्री** ने लोकसभा में अपने ओजस्ती उद्बोधन में क्रांतिकारी डॉक्टर गया प्रसाद कटियार के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डालकर भारत सरकार का ध्यान आकर्षित किया जिसके फल स्वरुप भारत सरकार ने उनके सम्मान में वर्ष 2016 में ₹5 मूल्य का डाक टिकट जारी किया |

शोषण विहीन व वर्ग विहीन समाज की स्थापना में आजीवन लग रहे डॉक्टर गया प्रसाद कटियार ने अपनी मृत्यु से कुछ दिन पूर्व एक इंटरव्यू में अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा था, **" आजादी के बाद का जो नक्शा हमने सोचा था उसका एक कोना भी पूरा नहीं हुआ | इस आज़ादी ने गोरे शासकों के स्थान पर काले शासकों को स्थापित किया है | क्या यही सच है ? "** इसका जवाब डॉ. गया प्रसाद कटियार के देशवासियों को देना है जिनके लिए वे जीवित रहे और आजीवन असंख्य यातनाएं सहते रहे | आज जरूरत है, ऐसे क्रांति योद्धा को हमारे समाज में उचित स्थान दिलाने की, जिससे कि उनसे प्रेरणा ग्रहण की जा सके |



हिंदुस्तान, कानपुर, 26 जनवरी 2022

घाटमपुर/बिल्हौर

गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

अपनी ही माटी में पहचान को मोहताज डॉ. गया प्रसाद

शिवराजपुर | अरविन्द कटियार

देश को आजाद कराने के लिए परिवार से दूर रहकर काले पानी की सजा काटने वाले शहीद डॉक्टर गया प्रसाद कटियार को जो सम्मान मिलना चाहिए वह उनको आज तक नहीं हासिल हो सका।

डॉ. गया प्रसाद कटियार शिवराजपुर विकासखंड के जगदीशपुर गांव के रहने वाले थे। गांव में आज भी उनका पैतृक आवास बना हुआ है। उनका परिवार कई सालों से कानपुर के इंदिरा नगर में रहने लगा है लेकिन नई पीढ़ी में कम लोग ही ऐसे होंगे जिन्हें डॉ. गया प्रसाद के देश के लिए योगदान याद हो। क्रांतिकारी डॉक्टर गया प्रसाद कटियार का जन्म बिल्हौर के खजुरी गांव में जमींदार भोजी लाल कटियार के घर हुआ था। लेकिन अधिकांश समय उन्होंने जगदीशपुर गांव में ही बिताया।

डॉ. गया प्रसाद की पत्नी निर्मला देवी।

हाई स्कूल की पढ़ाई अंग्रेजी माध्यम से पूरी करने के बाद भी पीएमपी का कोर्स पूरा कर 1918 में गांव के ही दवाखाना खोलकर प्रैक्टिस करने लगे। उन दिनों आर्य समाज गुलामी के प्रति जनमत तैयार कर रहा था। डॉक्टर साहब में भी अंग्रेजों के प्रति नफरत पैदा हो गई 1921 में उन्होंने महात्मा गांधी के शुरू किए गए असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर प्रैक्टिस छोड़ दी और खुलकर लड़ाई में आ गए। अंग्रेजों के खिलाफ खड़े होने पर चौरीचौरा कांड के बाद गांधीजी के असहयोग आंदोलन वापस ले लिए जाने से वह नाराज हो गए और वह मजदूर सभा के साथ खड़े हो गए उन्होंने कई जगहों पर आजादी के दीवानों को अपने साथ जोड़ कर देश को आजाद कराने में अहम भूमिका निभाई साथ ही वह क्रांतिकारी पार्टी में भी शामिल हो गए।

शहीद परिसर में लगी डॉक्टर गया प्रसाद की प्रतिमा।

पत्नी निर्मला देवी इस क्रांतिकारी स्वभाव से उनसे कई बार नाराज भी हुईं। लेकिन वह किसी तरह अपनी पत्नी को समझा-बुझाकर देश की आजादी के लिए घर से आजाद हो गए। इस दौरान वह सुरेंद्र नाथ पांडे, जयदेव कपूर जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आ गए। आजादी की मंजिल तक पहुंचने के लिए उन्होंने डाक्टरी पेशे की आड़ में क्रांतिकारियों को बचाने हेतु अंग्रेजों को कई बार धोखा दिया। जब पुलिस क्रांतिकारियों की तलाश कर रही थी उस समय डॉक्टर गया प्रसाद कटियार सहारनपुर में अपने साथी शिव वर्मा और जयदेव कपूर के साथ दवाखाने की आड़ में बम बना रहे थे एक साथी की गद्दारी के चलते 12 मई 1929 को वह वहीं से गिरफ्तार कर लिए गए और जेल भेज दिया गया। जहां उन्हें काले पानी की सजा सुना दी गई और उन्होंने 18 वर्ष काले पानी की सजा काटी। इस समय उनकी पत्नी निर्मला देवी कई बीमारियों से जूझ रही है।

"खुद को मिटाकर किया आपने देश पर उपकार , आजादी मिली हमें आपके बल हुई है जय जयकार
ऋणी रहेगा राष्ट्र सदा ये दिल से देगा सत्कार , नमन आपको क्रांतिकारी गया प्रसाद कटियार "

लेखक - देव कबीर

निर्मला देवी जी के देहांत से निश्चित ही कानपुर ने एक महान विरासत को खो दिया है | मैं कुछ समय पूर्व अपने लखनऊ निवासी मित्र प्रो• दुर्गेश चौधरी जी के साथ माता जी से मिला था | मुझे बड़ा गर्व होता है खुद पर कि मैं ऐसे परिवार के साथ जुड़ा, जिसका संबंध भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से है वह भी कोई आम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी नहीं बल्कि बर्तानिया हुकूमत के समय युवाओं के रोल मॉडल रहे शहीद भगत सिंह के साथी डाक्टर गया प्रसाद कटियार जी के परिवार के साथ|उनके पुत्र क्रांति कुमार कटियार मुझे जानते हैं मुझे अपना मित्र मानते हैं सहयोगी की तरह सलाह लेते और देते हैं। शहीदों की स्मृति में कानपुर शहर में चल रहे कार्यक्रमों में मुझे भी आमंत्रित करते हैं अपने साथ जोड़े रखते हैं।

उनके साथ जुड़कर स्वतंत्रता संग्राम के संबंध में मेरी समझ और गहरी हुई है जिस प्रेरणा से मैं 1857 के स्वतंत्रता संग्राम पर एक शोध पूर्ण पुस्तक - "रोटी कमल चर्बी और 1857" लिख रहा हूँ |

क्रांति कुमार भाई से मुझे मिलाने का श्रेय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार के चश्मो चिराग भाई शाह आलम जी को जाता है जो चंबल फाउंडेशन के नाम से शहीदों की स्मृतियों को जीवंत रखने का निरंतर काम करते रहते हैं।

लेखक : प्रोफेसर चमन लाल

कानपुर में 2007 में भगत सिंह जन्म शताब्दी वर्ष में जाना हुआ था तब वहाँ क्रांतिकारी डॉ॰ लक्ष्मी सहगल के साथ मंच शेयर किया था। 10 मई 2015 को राजीव पाल की किताब "कलम, क्रांति, कानपुर और भगत सिंह" के लोकार्पण और चर्चा के अवसर पर जाना हुआ, तब वहाँ पर **श्रीमती निर्मला कटियार, अपने बेटे क्रांति कुमार कटियार के साथ आईं।** कुछ अन्य पुराने क्रांतिकारी भी आए, सबसे ज्यादा बात तो नहीं हुई, लेकिन मैंने उस समय के चित्र जरूर लिए। बाद में क्रांति कुमार से निरंतर वार्तालाप रहा और अब सुरेंद्र पांडे के पौत्र सुधिंदर पांडे से भी संपर्क है। भगत सिंह के साथियों में सिर्फ जय देव कपूर से संपर्क रहा और उन पर कुछ लिखा भी, वे जालंधर देश भक्त यादगार हाल में पाश स्मृति कार्यक्रम में आए भी थे| श्रीमति निर्मला कटियार जी ने खूब अच्छी उमर जी और अपने देहदान से उन्होंने क्रांतिकारी पति गया प्रसाद जी की परंपरा का ही पालन किया।



| याद करो कुर्बानी | बिल्हौर के खजूरी में जन्मे डॉ. गयाप्रसाद ने लाहौर षड्यंत्र केस में कालापानी भी काटा, भगत सिंह, जयदेव, सुखदेव जैसे क्रांतिकारियों के साथ ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ बम बनाते रहे

पत्नी ने सिंदूर पोंछ कर कहा था- अब आप देश के लिए लड़िए



पुत्रों के नाम रखे क्रांति और स्वतंत्र

हिंदुस्तान कानपुर 15 अगस्त 2022

क्रान्तिकारी डॉ. गया प्रसाद कटियार का जेल जीवन एवं भूख हड़तालें

स्वतन्त्रता आन्दोलन में जेल यात्राएँ

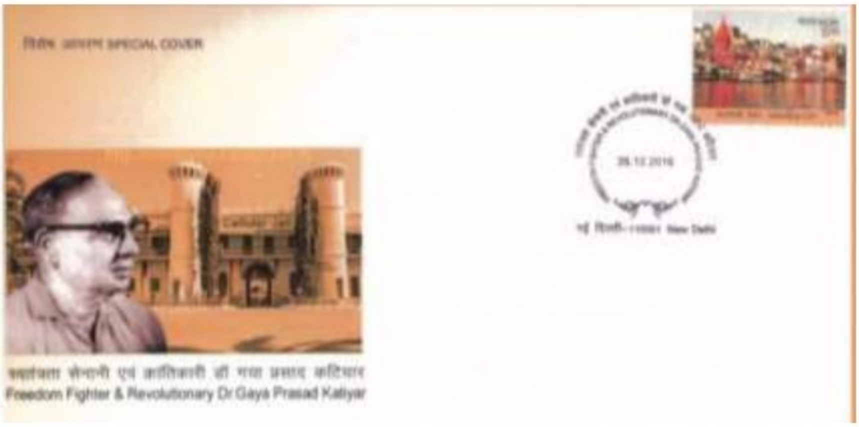
1. 15 मई 1929 को सहारनपुर दवाखाना एवं पार्टी कार्यालय एवं बम फैक्ट्री से गिरफ्तार हुए थे।
2. 15 मई से 31 मई 1929 ई. तक सहारनपुर कोतवाली (पुलिस रिमांड)
3. 1 जून से 10 जुलाई 1929 तक लाहौर फोर्ट हवालात (अब पाकिस्तान में)
4. 10 जुलाई 1929 से 7 अक्टूबर 1930 तक लाहौर बोर्सटल जेल में रहे। (यहीं पर लाहौर षड्यंत्र केस चला और आजीवन काला पानी की सजा मिली थी)
5. 07/10/1930 से नवम्बर 1930 तक लाहौर सेण्ट्रल जेल (अब पाकिस्तान में) में रहे।
6. 1 दिसम्बर 1930 से 31.12.1930 न्यू सेण्ट्रल जेल मुल्तान (अब पाकिस्तान में) रहे।
7. जनवरी 1931 से अक्टूबर 1932 तक बेलारी सेण्ट्रल जेल (कर्नाटक) में रहे।
8. नवम्बर 1932 से सितम्बर 1937 तक सेल्यूलर जेल, अण्डमान निकोबार (काला पानी) में रहे।
9. सितम्बर 1937 से नवम्बर 1937 तक दमदम सेण्ट्रल जेल कलकत्ता रहे।
10. दिसम्बर 1937 लाहौर सेण्ट्रल जेल (अब पाकिस्तान में) रहे।
11. जनवरी 1938, नैनी सेण्ट्रल जेल (इलाहाबाद) में रहे।
12. फरवरी 1938 से जून 1942 लखनऊ सेण्ट्रल जेल में रहे।
13. जुलाई 1942 से 1945 तक सुल्तानपुर जेल में रहे।
14. जनवरी 1945 से फरवरी 1946 तक कानपुर सेण्ट्रल जेल में रहे।
15. 21 फरवरी 1946 को लगभग 17 वर्ष (202 महीने) बाद जेल से रिहा किये गये थे।

भूख हड़तालें

1. 13 जुलाई 1929 से 15 सितम्बर 1929 तक कुल 65 दिन की भूख हड़ताल बोर्सटल जेल लाहौर में की थी।
2. 21 दिन की भूख हड़ताल बोर्सटल जेल लाहौर में की थी।
3. 24 दिन की भूख हड़ताल सेल्यूलर जेल लाहौर में की थी।
4. 46 दिन की भूख हड़ताल सेल्यूलर जेल अण्डमान निकोबार में की थी।
5. 37 दिन भूख हड़ताल सेल्यूलर जेल, अण्डमान निकोबार में की थी।
6. उपरोक्त के अलावा कई अन्य भूख हड़तालें। कुल योग - डेढ़ वर्ष से अधिक।

स्वतंत्र भारत में जेल यात्राएँ

1. सन् 1958 में छह माह का जेल जीवन।
2. सन् 1964 से 1966 तक डेढ़ वर्ष का जेल जीवन।
3. उपरोक्त जेल जीवन में भूख हड़तालें भी कीं।





भारतीय डाक विभाग द्वारा डॉ• गया प्रसाद कटियार पर निकाले गए विशेष आवरण

जागरण

SUBSCRIBE

होम ताज़ा पॉलिटिक्स राष्ट्रीय शेयर बाजार दु

जयंती विशेष : असेंबली में फेंके गए थे कानपुर बिल्हौर के डॉ. कटियार की देखरेख में बने बम

शहीद-ए-आजम भगत सिंह सुखदेव और राजगुरु के साथी रहे डॉ. गया प्रसाद कटियार का जन्म 20 जून 1900 को बिल्हौर क्षेत्र के गांव खजुरी खुर्द में हुआ था।

आजादी की मूक बलिदानी रज्जो देवी कटियार

घटना 1925 की है | उन दिनों क्रांतिकारी आंदोलन पूरे जोरों पर था| देशभर के नवयुवकों ने भारत माता को स्वतंत्र कराने हेतु एक क्रांतिकारी दल का गठन किया जिसका नाम था 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' | जिसके कमांडर-इन-चीफ चंद्रशेखर आजाद व दल के बौद्धिक नेता थे सरदार भगत सिंह | डॉक्टर गया प्रसाद कटियार इस दल के सक्रिय सदस्य थे परंतु जब दल को पता चला कि डॉक्टर गया प्रसाद एक शादीशुदा व्यक्ति हैं तो दल ने उन्हें रखने से मना कर दिया और कहा कि अपनी पत्नी से इजाजत लेकर आओ तभी आपको दल में रखकर भारत माता की सेवा करने का मौका दिया जा सकता है|

यह सुनकर डॉक्टर गया प्रसाद सीधे अपनी पत्नी रज्जो देवी के पास पहुँचे और बोले *"मैं क्रांतिकारी पार्टी का सदस्य बनना चाहता हूँ तुम अपने हाथ से अपना सिंदूर पोंछ लो और समझ लो कि तुम विधवा हो गई हो"*

यह सुनकर पत्नी रज्जो देवी रो पड़ी, उन्हें रोता देखकर डॉक्टर साहब ने उनसे कहा तुमने तो हर फैसले में मेरा साथ देने का वादा किया था आज यह वादा भूल कर रोना कैसा | रज्जो देवी ने अपने आप को संभाल कर उत्तर दिया " मैं अंत तक अपना वचन निभाऊंगी, इस समय देश को समर्पित करने के लिए मेरे पास तुमसे अधिक मूल्यवान और कोई वस्तु नहीं है| आज से मैं तुम्हें परिवार के सभी माया मोह से मुक्त करती हूँ, जो बैरागी जिस रास्ते पर चल पड़े हो उसे अंत तक निभाना और पीछे मुड़कर मत देखना| " यह कहकर उन्होंने अपने ही हाथों से सिंदूर पोंछ लिया |



(तस्वीर में रज्जो देवी कटियार और गोद में बैठी पुत्री उमा)

इधर डॉ•गया प्रसाद सहारनपुर बम फैक्ट्री का संचालन करते हुए गिरफ्तार हो गए और पुलिस सुपरिटेंडेंट सांडर्स की हत्या में शामिल होने के इल्जाम में प्रसिद्ध लाहौर षड्यंत्र केस में आजीवन कारावास की सजा देकर अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें काला पानी जेल भेज दिया पति के गिरफ्तार होने के बाद रज्जो देवी जीते जी अपने पति के दर्शन ना कर सकी और तिल-तिल कर उस सुहागिन ने अपने प्राण त्याग दिए|

22 जून 2004 को दैनिक जागरण बरेली से प्रकाशित स्व• निर्मला कटियार का विशेष साक्षात्कार ॥

4 बरेली, 22 जून, 2004

गोरों से आगे निकल गए ये 'काले'

जागरण मेहमान

अजय सक्सेना, बरेली

हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर झूल जाने वाले आजादी के दीवाने सरदार भगत सिंह के साथ आजादी की लड़ाई लड़ने वाले डा. गया प्रसाद कटियार की पत्नी निर्मला कटियार व्यथित है कि जो 'गोरों' के शासन में होता था, वहीं आज 'कालों' के शासन में हो रहा है। हर तरफ फैले भ्रष्टाचार और बेइमानी से वह परेशान है।

डा. कटियार सरदार भगत सिंह के करीबियों में से थे। डा. कटियार ने ही उस अंग्रेज पुलिस के डिप्टी एसपी जेपी सांडर्स की हत्या का षडयंत्र बनाया था, जिसमें भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी हुई थी। लाला लाजपत राय की हत्या के बाद हुए आंदोलन के दौरान सांडर्स ने लाठी चार्ज किया था और इसी कारण उसकी हत्या का षडयंत्र (इसे लाहौर षडयंत्र केस के नाम से पहचाना जाता है।) बनाया गया था। षडयंत्र बनाने के आरोप में डा. कटियार समेत सात लोगों को आजीवन कारावास हुआ था। अंडमान-निकोबार में कालापानी की सजा काटने के बाद जब 1946 में डा. कटियार लौटे तो उनका विवाह निर्मला देवी से हुआ। यह डा. कटियार का दूसरा विवाह था। डा. कटियार कानपुर के बिल्हौर क्षेत्र के रहने वाले थे और अब 1993 में उनकी मौत के बाद से उनकी पत्नी निर्मला कानपुर शहर में रह रही है। निर्मला कटियार की छोटी बहन रमा और बहनोई काशीराम गंगवार यहां राजेंद्र नगर में रह रहे है। श्रीमती कटियार आजकल यहां आई हुई है। कल उन्होंने बहेड़ी क्षेत्र में डा. कटियार की 105 वीं जयंती के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। श्री गंगवार के घर निर्मला कटियार ने 'जागरण' की बात हुई। कानों से कमजोर निर्मला कटियार (78 वर्ष) से सवाल पूछने पर उनकी जुबान पर इस देश में पल रहे भ्रष्टाचार आदि की बुराई तब भी आ जाती है। पहले तो उन्होंने भगत सिंह से नजदीकियों के बारे में उन्होंने बताया- 'डाक्टर साहब सरदार भगत सिंह के सबसे ज्यादा विश्वासपात्रों में से एक थे। एक बार जब भेष बदलने के लिए उन्होंने अपने केश कटवाने चले तो नाई के बजाए उन्होंने डा. साहब से कटवाए थे, जिससे भेद न खुले।' यह बात बताने के बाद उन्होंने डा. कटियार के उन सपनों का जिक्र करते हुए वर्तमान पर टिप्पणियां कीं।



निर्मला कटियार

उन्होंने बताया कि डा. साहब एक ऐसा स्वतंत्र देश चाहते थे, जहां सबको बराबर समझा जाए, भ्रष्टाचार-अत्याचार न हो। यह बात कहते हुए निर्मला कटियार बोल पड़ीं, परंतु डा. साहब का वह सपना टूट गया। आज हर तरफ बेईमानी है। आजाद होने से फर्क इतना पड़ा कि सत्ता कालों के हाथ में आ गई, बाकी कुछ नहीं बदला। भ्रष्टाचार का एक किस्सा उन्होंने डा. कटियार से ही जुड़ा हुआ बताया।

उन्होंने बताया कि बरेली में आवास विकास परिषद की कालोनी का मकान खरीदने के लिए डा. साहब ने बीस वर्ष पहले दो हजार रुपये में बुकिंग कराई थी। परिषद के अधिकारी दो हजार रुपये डकार गए, वह रसीद लेकर दौड़-भाग करते रहे, लेकिन न तो मकान मिला और न ही पैसे आज तक वापस मिले। उनके शब्दों में- *'देश को आजाद कराने के बाद राजनीति में डाक्टर साहब जरूर उतरे, परंतु कभी समझौता नहीं किया। राजनीति आजकल बहुत खराब हो चली है, हर तरफ धोखा है।'* ये सारी बातें करते-करते थक चुकी निर्मला कटियार कह उठीं- *अब बस कुछ बताने की हिम्मत नहीं है।*

बुझ गयी क्रांति शौर्यगाथा दीप की अंतिम लौ भी...

लेखक : नूर इदरीसी

दिनाँक 14 फरवरी की रात्रि क्रांतिवीर सरदार भगत सिंह के साथी क्रांतिकारी डॉ गया प्रसाद कटियार की जीवन संगिनी श्रद्धेया निर्मला देवी कटियार के अँतिम साँस लेते ही क्रान्तिदीप की अंतिम लौ भी बुझ गयी।

श्रद्धेया निर्मला जी वास्तव में सच्ची वीरांगना थीं।वे कभी भी अपने पति के क्रांतिपथ की अवरोधक नहीं बनीं।उन्होनें अपनी देशभक्ति की भावनाओं से अपने पति का उत्साहवर्धन ही किया।

डॉ गया प्रसाद जी कटियार का जन्म बिल्हौर के निकट खजुरी खुर्द में हुआ था। वे भारत माता की दास्ता से बहुत दुखी थे।और उन्होनें क्रांति पथ का अनुगमन किया। सरदार भगतसिंह से भैंट के पश्चात वे उनके विश्वस्त साथी बन गये।

वे छद्मवेश में अलग अलग स्थानों पर क्लीनिक खोल कर क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेते थे। 15 मई 1929 को प्रथम गिरफ्तारी के बाद से वे भारत की विभिन्न जेलों में रहे। 1932 से 1937 तक उन्हें अंडमान निकोबार की सेलियुलर जेल (काला पानी)की यातनाएं सहनी पड़ीं।

श्रद्धेया निर्मला देवी नें पति की अनुपस्थिति में पारिवारिक दायित्तों को निभाया तथा देश प्रेम की भावना का संचार किया। जब वो अपने पति से मिलने जेल जातीं थीं तो दूसरे क्रांतिकारियों से भी वार्ता करतीं एवम उनको उत्साहित करतीं थीं।

उनकी क्रान्तिकारी भावनाओं का प्रमाण इसबात से ही लगाया जा सकता है कि उन्होंने अपने प्रथम पुत्र का नाम क्रांति कुमार तथा द्वतीय पुत्र का नाम स्वतंत्र प्रकाश रखा। डॉ गयाप्रसाद के स्वर्गवास के बाद भी उन्होंनें न केवल अपने पारिवारिक दायित्तों का निर्वाह किया बल्कि नारी सशक्तीकरण के लिए प्रयासरत भी रहीं।

स्वतंत्रता दिवस एवम गणतंत्र दिवस पर वे सदैव आयोजन करके देश प्रेम की भावना का संचार करतीं थीं और पत्रकार वार्ता कर अपना संदेश भी देतीं थीं।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में जो बात हृदय को बहुत सालती है वो यह है कि देश की स्वतंत्रता के पश्चात बिल्हौर क्षेत्र से अनवरत रूप से ये माँग की गयी कि स्वतंत्रता के महान क्रान्तिकारी डॉ गया प्रसाद कटियार के नाम से कोई स्मारक बना दिया जाय ।जब कानपुर विश्व विद्यालय बना तब उसे डॉ गया प्रसाद कटियार विश्व विद्यालय नाम देने का आग्रह किया गया। बिल्हौर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के उद्घाटन के समय स्वयं मैंने और हमारे साथियों नें तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व वीर बहादुर सिंह से मंच पर इसका नामकरण डा गया प्रसाद सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करने का आग्रह किया जिसके लिए उन्होंने आश्वस्त भी किया लेकिन हो नहीं सका।शायद भारत सरकारें क्रांतिकारियों को कोई श्रेय नहीं देना चाहतीं।

इस परिप्रेक्ष्य में बिल्हौर नगर पालिका परिषद के पूर्व चेयरमैन कामरेड असर हुसैन ने वार्ड पुनर्गठन के समय सड़क किनारे के एक वार्ड का नाम डॉ गया प्रसाद नगर कर दिया।इसके अतिरिक्त स्व डॉ देश राज कटियार , श्री आर डी कुरील सहित मैंने एवम कुछ अन्य लोगों ने ब्लाक में उनकी प्रतिमा स्थापित की एवम एक स्मारिका का प्रकाशन कराया|

*---****---*



आजाद के साथी की पत्नी का निधन
गार्ड ऑफ ऑनर के साथ देहदान



निर्मला देवी कटियार का नेत्रदान भी हुआ, वर्ष 2009 में लिया था संकल्प

शहीद भगत सिंह के साथी गया प्रसाद की पत्नी का देह दान

कालापानी की सजा काट चुके सेनानी की पत्नी का देहदान

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। शहीद भगत सिंह व चंद्रशेखर आजाद के साथी रहे कानपुर के डॉ. गया प्रसाद कटियार को वर्ष 1930 में कालापानी की सजा दी गई थी। छूटने के कुछ समय बाद उनकी मौत हो गई थी। उनकी पत्नी निर्मला देवी (93) ने वर्ष 2009 में देहदान का संकल्प लिया था। बुधवार को उनकी मौत होने पर उनके बेटे ने मां की अंतिम इच्छा पूरी की और जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज को उनकी देह दान कर दी।



प्राचार्य को देहदान पत्र देते अभियान प्रमुख मनोज सेंगर व अन्य। इनसेट: निर्मला देवी।

कल्याणपुर इंदिरा नगर निवासी निर्मला देवी का बुधवार सुबह करीब चार बजे निधन हो गया। बेटे क्रांति कटियार ने देहदान अभियान प्रमुख मनोज सेंगर को सूचना दी। मनोज सेंगर ने मेडिकल कॉलेज की नेत्र रोग विभागाध्यक्ष डॉ. शालिनी मोहन व एनाटमी विभागाध्यक्ष डॉ. प्रमोद को जानकारी दी।

डॉ. शालिनी की मदद से दिवंगत निर्मला देवी का नेत्रदान कराया गया। दोपहर करीब तीन बजे पार्थिव देह मेडिकल कॉलेज पहुंची। यहां पर उन्हें पुलिस कर्मियों ने गार्ड ऑफ ऑनर दिया। फिर पुत्र क्रांति, परिजनों व साथियों ने पुष्पांजलि अर्पित कर दिवंगत निर्मला देवी की देह दान की। इस दौरान विधायक नीलिमा कटियार, माधवी सेंगर, स्वतंत्र प्रकाश कटियार, पुत्रवधू डॉ. सुमन बाला कटियार, पौत्र आजाद कटियार, शौर्य कटियार, पौत्री विप्लवी कटियार, प्रताप साहनी, रमेशचंद, प्रखर श्रीवास्तव और देव कुमार आदि उपस्थित रहे।

• भगत सिंह व चंद्रशेखर आजाद के साथी थे डॉ. गया प्रसाद

लाहौर कांड में मिली थी सजा

देहदान अभियान प्रमुख मनोज सेंगर ने बताया कि लाहौर कांड में 12 लोग शामिल थे। इनमें से भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु को फांसी दे दी गई थी और डॉ. गया प्रसाद समेत अन्य लोगों को कालेपानी की सजा दी गई थी। युग दधीचि देहदान महायज्ञ में यह 271वीं आहुति प्रदान की गई है। देहदान के वक्त अभियान प्रमुख मनोज सेंगर व उनकी पत्नी माधवी सेंगर ने प्राचार्य डॉ. संजय काला व एनाटमी प्रभारी डॉ. प्रमोद कुमार को समर्पित किया।

रिपब्लिकन आर्मी में सक्रिय थे डॉ. गया प्रसाद



डॉ. सुमन बाला कटियार के मुताबिक देश को स्वतंत्र कराने के लिए हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी का गठन किया गया था, जिसके कमांडर इन चीफ चंद्रशेखर आजाद और दल के बौद्धिक नेता सरदार भगत सिंह थे। डॉ. गया प्रसाद कटियार दल के सक्रिय सदस्य थे। जब दल को पता चला कि वे शादीशुदा हैं तो उन्हें रखने से मना कर दिया गया और पत्नी से इजाजत लेकर आने को कहा गया। तब वह पत्नी के पास गए और बोले कि मैं क्रांतिकारी पार्टी का सदस्य बनना चाहता हूं। तुम अपना सिंदूर पोंछ लो और समझो कि तुम विधवा हो गई हो। यह सुनकर उनकी पत्नी रो पड़ीं। काफी समझाने पर उनकी पत्नी ने अपने आंसू पोंछते हुए बोला था कि मैं अंत तक आपका साथ निभाऊंगी। देश को स्वाधीन करने के लिए मेरे पास तुमसे अधिक मूल्यवान और कोई नहीं है। आज से मैं तुम्हें परिवार के सभी मोह से मुक्त करती हूं। उसके बाद वह चले गए और सहारनपुर बम फैक्ट्री का संचालन करते हुए गिरफ्तार हो गए और पुलिस सुपरिटेंडेंट सांडर्स की हत्या में शामिल होने के इल्जाम में लाहौर षड्यंत्र केस में आजीवन कारावास की सजा देकर उन्हें काला पानी भेज दिया गया था, तब वह 17-18 वर्ष के थे।

भगत सिंह के साथी क्रांतिकारी डॉ. गयाप्रसाद की पत्नी थीं निर्मला कटियार

क्रांतिवीर पति ने काटा था काला पानी, अब पत्नी ने किया देहदान

त्याग

कानपुर, वरिष्ठ संवाददाता। मातृभूमि को जो कुछ भी अर्पण किया जाए, कम है। 94 वर्ष की निर्मला कटियार यही सिखा गईं। बुधवार को संकल्प के मुताबिक उनके परिवार ने उनका देहदान मेडिकल कॉलेज को किया। वह क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद और भगत सिंह के साथी डॉ. गया प्रसाद कटियार की धर्मपत्नी थीं। डॉ. कटियार ने असेंबली बम कांड के बाद काला पानी की सजा काटी थी।



भगत सिंह के साथी डॉ. गया प्रसाद की पत्नी निर्मला की देह उनके बेटे क्रांति कटियार ने जीएसवीएम को दे दी।

देहदान से पहले निर्मला कटियार को उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इंदिरा नगर, कल्याणपुर निवासी उनके पुत्र क्रांति कटियार ने सुबह देहदान अभियान प्रमुख मनोज सेंगर को उनकी मृत्यु की जानकारी दी। डॉ. शालिनी मोहन की सहायता से उनका नेत्रदान कराया गया। फिर पार्थिव शरीर जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज ले जाया गया। गार्ड ऑफ ऑनर के बाद मंत्रोच्चार के बीच क्रांति कटियार ने जलता दीपक ले कर मृत देह की परिक्रमा की। परिवार व स्वजनों ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए अंतिम विदाई दी। देहदान अभियान प्रमुख मनोज सेंगर ने बताया कि डॉ. गया प्रसाद उन 12 लोगों में थे, जिन्हें लाहौर केस में कालेपानी की सजा दी गई थी। निर्मला देवी ने 2009 में देहदान का संकल्प लिया था। युग दधीचि देहदान महायज्ञ में यह 271वीं आहुति है। माधवी सेंगर ने प्राचार्य डॉ संजय काला और एनाटमी प्रभारी डॉ. प्रमोद कुमार को पत्रक दिए। देहदान के वक्त स्वतंत्र कटियार, विधायक नीलिमा कटियार, डॉ. सुमन बाला कटियार, पौत्र आजाद कटियार, शौर्य कटियार, पौत्री विप्लवी कटियार, मित्र प्रताप साहनी, रमेशचंद्र, प्रखर श्रीवास्तव और देव कुमार आदि उपस्थित रहे।



निर्मला कटियार (फाइल फोटो)

amarujala.com

जालंधर जालंधर | शुक्रवार, 16 फरवरी 2024 **2**

क्रांतिकारी डॉ. गया प्रसाद की पत्नी निर्मला देवी की मेडिकल कॉलेज कानपुर को देहदान

शहीद भगत सिंह के साथी थे डॉ. गया प्रसाद

संवाद न्यूज एजेंसी

फिरोजपुर। शहीद-ए-आजम भगत सिंह के साथी क्रांतिकारी डॉ. गया प्रसाद की पत्नी निर्मला देवी का बुधवार रात्रि सवा बारह बजे कानपुर में देहांत हो गया है। डॉ. गया प्रसाद ने फिरोजपुर शहर के तूड़ी बाजार में किराये पर इमारत लेकर गुप्त ठिकाना बनाया था, यहां पर शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव, शिव वर्मा, विजय कुमार सिन्हा, महावीर सिंह व अन्य क्रांतिकारियों का आना-जाना था। उक्त ठिकाना आज भी फिरोजपुर शहर के मुहल्ला शाहगंज, तूड़ी बाजार में मौजूद है।

स्व. डॉ. गया प्रसाद के बेटे क्रांति कुमार कटियार वासी कानपुर ने बताया कि, उनकी माता निर्मला देवी का बुधवार रात्रि सवा बारह बजे देहांत हो गया। कटियार ने बताया कि उनके

फिरोजपुर तूड़ी बाजार में गया प्रसाद ने किराए पर इमारत लेकर बनाया था गुप्त ठिकाना

पिता शहीद भगत सिंह के दोस्त थे। उनके पिता ने ही फिरोजपुर शहर के तूड़ी बाजार में इमारत किराये पर लेकर गुप्त ठिकाना बनाया था। इमारत के नीचे दवाखाना खोला था, ऊपर की इमारत में क्रांतिकारियों का आना-जाना था। ये गुप्त ठिकाना दस अगस्त 1928 से लेकर चार फरवरी 1929 तक रहा। डॉ. गया प्रसाद के पकड़े जाने पर उन्हें काले पानी की सजा हुई थी। काले पानी की सजा भुगतने के बाद पिता उनके साथ रहे और फिर उनकी मौत हो गई। माता निर्मला देवी ने पिता की मौत के बाद दोनों भाइयों का पालन-पोषण किया। उनके पिता का देश की आजादी में काफी योगदान रहा है।



निर्मला देवी। फाइल

निर्मला देवी की आंखों से दो व्यक्तियों को मिली रोशनी

बेटे क्रांति कुमार ने बताया कि महान क्रांतिकारी डॉ. गया प्रसाद कटियार (आजन्म कैद, कालापानी) की धर्मपत्नी निर्मला देवी कटियार के मरणोपरांत परिजनों द्वारा दो व्यक्तियों के आंखों में रोशनी हेतु नेत्रदान और चिकित्सा के छात्रों के शोध के लिए देहदान भी मेडिकल कॉलेज कानपुर को दी गई है। इस अवसर पर उनको प्रशासन द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया गया। निधन की सूचना पाकर उनके घर पर और मेडिकल कॉलेज पर सैकड़ों की संख्या में कानपुर के विभिन्न क्षेत्रों के वरिष्ठ समाजसेवियों ने उनको अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की।

कर चेकिंग शुरू कर दी।

लाहौर केस में काले पानी की सजा पाए गया प्रसाद की पत्नी का देहदान



निर्मल देवी कटियार
फाइल फोटो • सजग

जासं, कानपुर: लाहौर केस में काले पानी की सजा पाए डा. गया प्रसाद कटियार की 94 वर्षीय पत्नी इंद्रा नगर निवासी निर्मल देवी कटियार का बुधवार की तड़के चार बजे निधन हो गया। नेत्रदान के बाद उनका देहदान किया गया। इसके पहले पुलिस ने गार्ड आफ आनर दिया। लोगों ने पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

डा. गया प्रसाद कटियार को 15 मई 1929 लाहौर केस में गिरफ्तार किया गया था। एक जून से 10 जुलाई 1929 तक लाहौर फोर्ट हवालात फिर सात अक्टूबर 1930 तक लाहौर जेल में रहे थे। नवंबर 1932 से सितंबर 1937 तक सेल्यूलर जेल अंडमान निकोबार (काली पानी) में रहे थे। उनकी पत्नी निर्मल देवी का निधन होने पर देहदान के लिए उनका पार्थिव शरीर दोपहर तीन बजे जीएसवीएम ले जाया गया। वहां पुलिस ने गार्ड आफ आनर दिया। मंत्रोच्चार के बीच उनके पुत्र क्रांति कुमार ने हाथ में जलता हुआ दीपक लेकर मृत देह की परिक्रमा की। जीएसवीएम नेत्र विभाग प्रभारी डा. शालिनी मोहन की सहायता से नेत्रदान कराया गया। बाद में देहदान की गई। देहदान अभियान प्रमुख मनोज सेंगर ने बताया कि निर्मल देवी कटियार ने वर्ष 2009 के जून माह में देहदान का संकल्प लिया था। देहदान के पत्रक अभियान प्रमुख सेंगर व माधवी सेंगर ने प्राचार्य डा. संजय काला, एनाटमी प्रभारी डा. प्रमोद कुमार को समर्पित किए। इस दौरान विधायक नीलिमा कटियार, पुत्र क्रांति कुमार कटियार, स्वतंत्र प्रकाश कटियार, पुत्रवधू डा. सुमन बाला कटियार, पौत्र आजाद कटियार, शौर्य कटियार मौजूद रहे।

दैनिक जागरण - 15 फरवरी 2024



क्रांतिवीर गया प्रसाद की पत्नी की आंखों से दो की जिंदगी रोशन

निर्मला देवी कटियार का 14 को हुआ था देह और नेत्रदान

माई सिटी रिपोर्टर

बीपी कपूर की आंखों से दो रोगियों को मिलेगी रोशनी

36 छात्रों ने किया रक्तदान

निर्मला की आंख से देखेंगे राजू और सुरेंद्र

निर्मला की कॉर्निया से दो लोगों की दुनिया रोशन

क्रांतिवीर की पत्नी निर्मला देवी कटियार की आखों से देखेंगे राजू और सुरेंद्र



राजू



सुरेन्द्र

कानपुर (नगर छाया समाचार)। शहीद भगत सिंह के साथी रहे क्रांतिवीर गया प्रसाद कटियार की पत्नी निर्मला देवी कटियार जिनका देहदान विगत 14 फरवरी को हुआ था, उनकी आंखों से दो नेत्रहीन दुनिया देख सकेंगे, देहदान नेत्रदान अभियान प्रमुख मनोज सेंगर ने बताया कि प्राप्त कॉर्निया में एक ग्राम डहान, बांगरमऊ उन्नाव निवासी 50 वर्षीय राजू को एवम दूसरी तालग्राम, छीबरामऊ, कन्नौज निवासी 45 वर्षीय सुरेंद्र को प्रत्यारोपित कर उनकी दुनिया रोशन कर दी गई। रोशनी पाने वालों से भेंट कर लौटे पुत्र क्रांति कुमार कटियार ने रुंधे गले से बताया कि अपनी माताजी के नेत्रों को किन्हीं दो लोगों की आंखों में चमकता देख लगा जैसे मेरी मां एक बार फिर मुझे निहार रही हैं।

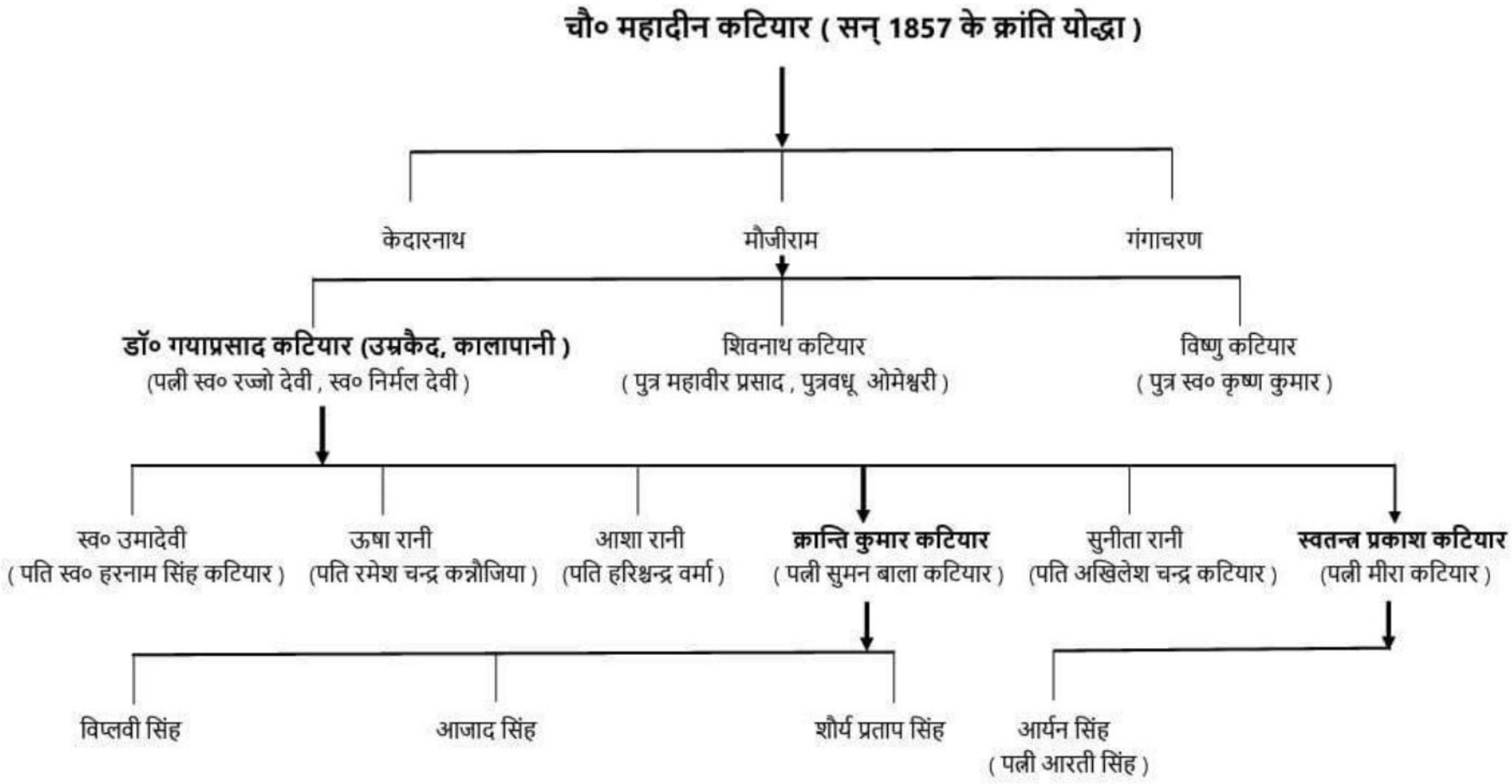
200 वर्ष तक जीवित रह सकती हैं आंखें –विगत बीस सालों से नेत्रदान अभियान चला रहे मनोज सेंगर ने बताया कि हमारी आंखें दो सौ वर्ष तक जीवित रह सकती हैं, यदि हम आज एक नब्बे वर्षीय व्यक्ति के नेत्र किसी बीस साल के युवक को प्रत्यारोपित करें और उस युवक की मृत्यु अस्सी साल की उम्र में हो तो वही नेत्र पुनः एक बार किसी युवा को प्रत्यारोपित किए जा सकते हैं, इस प्रकार एक व्यक्ति के नेत्र 200 वर्ष तक जीवित रह सकते है। सौभाग्य है कि एक क्रांतिवीर की पत्नी की आंखों से देख रहे हैं। दोनों नेत्र प्राप्त करने वालों को जब यह बताया गया कि वे जिनकी आंखों से देख रहे हैं, वे आंखे एक महान क्रांतिकारी और भगत सिंह के साथी रहे क्रांतिकारी डा. गया प्रसाद कटियार की पत्नी की हैं,तो वे अवाक रह गए, फिर लगभग एक साथ ही कहा कि यह उनका सौभाग्य है कि एक देशभक्त की त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति पत्नी निर्मला देवी की आंखों से उन्हें रोशनी मिली है। यह प्रत्यारोपण मेडिकल कॉलेज की नेत्र विभाग की अध्यक्ष डा शालिनी मोहन जी द्वारा किया गया है।



स्वर्गीय निर्मला कटियार जी का एक नेत्र श्री राजू निवासी बांगरमऊ (उन्नाव) को कार्निया प्रत्यारोपण कानपुर हैलेट अस्पताल में किया गया। तस्वीर में क्रांति कटियार उनकी पत्नी सुमनबाला, भाई स्वतंत्र प्रकाश और उनकी पत्नी मीरा हैं ।



स्वर्गीय निर्मला कटियार जी का एक नेत्र श्री सुरेंद्र निवासी तालीग्राम (कन्नौज) को कार्निया प्रत्यारोपण कानपुर हैलेट अस्पताल में सफलतापूर्वक किया गया।.....चित्र में क्रांति कटियार उनकी पत्नी सुमनबाला, बहन सुनीता, भाई की पत्नी मीरा, भतीजा आर्यन कटियार हैं ।


चौ० महादीन कटियार (सन् 1857 के क्रांति योद्धा)
केदारनाथ
मौजीराम
गंगाचरण
डॉ० गयाप्रसाद कटियार (उम्रकैद, कालापानी)
(पत्नी स्व० रज्जो देवी , स्व० निर्मल देवी)
शिवनाथ कटियार
(पुत्र महावीर प्रसाद , पुत्रवधू ओमेश्वरी)
विष्णु कटियार
(पुत्र स्व० कृष्ण कुमार)
स्व० उमादेवी
(पति स्व० हरनाम सिंह कटियार)
ऊषा रानी
(पति रमेश चन्द्र कन्नौजिया)
आशा रानी
(पति हरिश्चन्द्र वर्मा)
क्रान्ति कुमार कटियार
(पत्नी सुमन बाला कटियार)
सुनीता रानी
(पति अखिलेश चन्द्र कटियार)
स्वतन्त्र प्रकाश कटियार
(पत्नी मीरा कटियार)
विप्लवी सिंह
आजाद सिंह
शौर्य प्रताप सिंह
आर्यन सिंह
(पत्नी आरती सिंह)



